सहस्राधिक जनोंको लाभान्वित किया।

प्रश्न—डॉ० साहब! सूर्यकिरणोंके माध्यमसे क्या सभी रोग ठीक हो सकते हैं या कुछ विशेष?

उत्तर—इस पद्धतिके उपचारमें नीले रंगके प्रयोगसे बुखार, पुरानी पेचिश, अतिसार, संग्रहणी, खाँसी, कास-श्वास, शिरःशूल, शिरोरोग, गर्मी, प्रमेह, मूत्ररोग, विस्फोटक, श्लीपद इत्यादि; लाल रंगके प्रयोगसे समस्त वात-व्याधि, पीले रंगसे समस्त उदररोग, समस्त हृद्रोग आदि; हरे रंगसे समस्त त्वचारोग और किमधिकम् प्रायः सभी रोग नष्ट हो सकते हैं।

इस पद्धतिका मुख्य तात्पर्य उस पद्धतिसे है जिसमें लक्षाधिक ओषधियोंका प्रयोग न कर ओषधि-सेवन और संयम सबमें भानु-रश्मिकी प्रधानता हो और जिसमें सूर्य-किरणोंसे निर्मित जल, तैल, दिव्य शर्करा और गोलियोंका प्रयोग हो, धूपस्नानका प्रयोग हो।

प्रश्न—अभी आपने तैल, शर्करा, दिव्य जल और गोलियोंकी बात कही। कृपया उन्हें निर्मित करनेकी संक्षिप्त विधि बतायें!

उत्तर—जल-विधि—इस पद्धतिके अनुसार उपचार करनेके लिये रोगानुसार विभिन्न रंगोंकी बोतलें लेनी चाहिये, जो सर्वथा स्वच्छ, पारदर्शी और दाग या धब्बेसे रहित हों। बोतलके रंगका ही उसका ढक्कन या कार्क (डॉट) हो। फिर कूप, तालाब, नदी, झरना या चापाकल (हैण्डपाइप) का सर्वथा स्वच्छ जल चार परत मोटे

वस्त्रसे छान लें। तब उसे किसी बोतलमें इतना भरें कि केवल चार अङ्गुल ऊपर वह खाली रह जाय। फिर बोतलको ढक्कनसे भली प्रकार बंदकर उसे धूपमें खुली हवा और स्वच्छ स्थानमें एक लकड़ीकी पटिया अथवा तिपाई या चौकीपर रखें। उस स्थानपर पूर्वाह्न दस बजेसे अपराह्न पाँच बजेतक सूर्य-किरणें अबाधगतिसे आती हों और छाया न पड़ सके। पाँच बजते ही तत्काल बोतल वहाँसे हटाकर बोतलके रंगके ही पतंगी कागजमें लपेट कर आलमारीमें रख दे। धूपमें रखी बोतलोंमें धूपसे उष्णता पाकर जब रिक्त भागमें वाष्पबिन्दु एकत्र हो जाय तो उस जलको निर्मित मान लेना चाहिये। इस जलको रोग और मात्राके अनुसार पी भी सकते हैं और इसकी पट्टीद्वारा या इससे धोकर बाह्य उपचार भी कर सकते हैं। किंतु उपर्युक्त निर्देशका पालन अवश्य हो। त्रुटि हानिप्रद हो सकती है। यदि भूलसे बोतल सूर्यास्ततक वहाँ रह जाय अर्थात् उसपर चन्द्रमा आदिकी रोशनी पड़ जाय तो जल तत्काल फेंक देना चाहिये और बोतलको धो देना चाहिये। वैसे जल, शर्करा, गोलियाँ या तैल सभी चैत्रसे ज्येष्ठ मासतक तैयार करें; क्योंकि तब यथेष्ट किरणें मिलती हैं। जब कई रंगकी बोतलें धूपमें रखनी हों तो उन्हें सटाकर नहीं रखना चाहिये। एक बोतलमें केवल एक बार जलादि तैयार कर उसमें तीन दिनतक नहीं रखे, वरन् दूसरी श्वेत वर्णकी बोतलमें उलट दे। यदि कई बोतलें आलमारीमें रखी हों तो उनपर उन्हीं रंगोंका कागज लपेट दे। एकको छाया दूसरेपर न पड़ सके। एक दिनका तैयार जल केवल तीन दिनोंतक प्रयोग करे, फिर दूसरा बना ले।

तैल—शिरोरोगमें काँचकी नीली बोतलमें शुद्ध तिल, नारियल या बादामका तेल और त्वचा-रोगोंमें हरे रंगकी बोतलमें केवल तिलका तेल पूर्वोक्त रीतिसे भरकर कार्क या ढक्कनमें रूई लपेटकर भलीभाँति बंद कर दे। उसे भी लकड़ीपर ही ९० दिनोंतक रखे। प्रतिदिन रूई बदलता रहे। तैयार हो जानेपर इत्र मिला सकते हैं; पर रंग नहीं।

दिव्य शर्करा—अभीष्ट रंगकी बोतलोंमें दूधकी चीनी या पिसी मिश्री भरकर पूर्वोक्त विधानसे धूपमें रखे। शर्करा उसी बोतलमें रहने दे। जिस समय धूप न हो और धूपित जल उपलब्ध न हो, उस समय एक

बड़ी श्वेत बोतलमें आधा सेर जलमें तीन माशा शर्करा घोल दे तो वह जल भी पूर्वोक्त धूपित जलके समान हो जायगा। सूखी शर्करा सेवन न करे।

गोलियाँ—होमियोपैथीकी दूधसे बनी सादी गोलियाँ (Suger of Milk) आवश्यकतानुरूप कई बोतलोंमें पंद्रह दिनतक रखकर तैयार कर ले। वर्षाके समय पानी या शर्कराके स्थानपर इसकी एक या दो गोलियाँ मुखमें रखकर पानी पी लें।

धूप-स्नान—इसके विषयमें प्रायः सभी जानते हैं। पर यदि रोगीको कमरेमें स्नान कराना हो तो कमरेकी खिड़कियोंमें रोगानुसार काँच लगा दे तो दिनभर रोगी धूप-सेवन कर सकता है।

प्रश्न—डॉ० साहब! कृपया यह बताइये कि क्या यह पद्धति अन्य पद्धतियोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ है? यदि हाँ, तो इसे सर्वसाधारणमें मान्यता क्यों नहीं प्राप्त है?

उत्तर—देखिये भाई! आज चमत्कारका युग है। शिशुसे वृद्धपर्यन्त सभी चमत्कार चाहते हैं। उन्हें प्राकृतिक चिकित्सा स्वीकार नहीं है। वे सद्यः प्रभाव चाहते हैं, भले ही वह किसी अन्य आपत्तिको जन्म दे दे। इस पद्धतिमें ऐसी बात नहीं है। यह सर्वसुलभ है, अल्पव्ययी है और गुणकारी भी है। पर विज्ञानद्वारा आलसी और सुखेच्छु मानव इतनी सावधानी और प्रयत्नका कार्य क्यों करे? नहीं तो यह पद्धति उचित प्रकारसे प्रयुक्त होनेपर अमोघ सिद्ध हो सकती है। अतएव श्रेष्ठ है।

[प्रेषक—श्रीअश्विनीकुमारजी श्रीवास्तव 'अनल']